महात्मा गाँधी के विचार में स्त्रीत्त्व स्थान : एक मूल्यांकण

सद्दाम हुसैन

नारियों को जागरूक और सचेत बनाने की प्रक्रिया में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। गांधीजी नारी समानता हेतु नारियों का शिक्षित होना आवश्यक मानते हैं। 'हरिजन' के एक अंक में उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए कहा है– ''मैं स्त्रियों की समुचित शिक्षा का हिमायती हूँ, लेकिन यह भी मानता हूँ स्त्री दुनिया की प्रगति में अपना योग पुरुष की नकल करके या उसकी प्रतिस्पर्धा करके नहीं दे सकती है चाहे तो वह प्रतिस्पर्धा कर सकती है परन्तु पुरुष की नकल करके वह उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच सकती, जिस ऊँचाई तक वह पहुँच सकती है। उसे पुरुष का पूरक बनना चाहिए। गांधीजी स्त्री–शिक्षा को पुरुष शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा– पुत्र को शिक्षित करने का अर्थ है एक सदस्य को शिक्षित करना और स्त्री को शिक्षित करने का दो परिवारों को शिक्षित करना।''